ज्ञान शांति मैत्री

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा

हिंदी शिक्षण अधिगम केंद्र

द्वारा

जनसंचार विभाग

एवं

पत्रकारिता व जनसंचार विभाग, महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी

के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी

दिनांक : 14-15 जनवरी, 2017

प्रतिवेदन/रिपोर्ट

अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी

कार्यक्रम विवरण	कार्यक्रम का स्वरूप	कार्यक्रम स्थल	अवधि	आयोजक
संचार माध्यमों की भाषा और वैश्विक हिंदी	अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी	वर्धा, महाराष्ट्र	14-15 जनवरी, 2017	जनसंचार विभाग, म.गां.अं.हिं.वि., वर्धा तथा पत्रकारिता व जनसंचार विभाग, महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी

'संचार माध्यमों की भाषा और वैश्विक हिंदी' विषय पर आयोजित अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी (दिनांक 14-15 जनवरी, 2017)

हिंदी शिक्षण अधिगम केंद्र की आर्थिक मदद से महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा के जनसंचार विभाग और महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी के पत्रकारिता व जनसंचार विभाग ने संयुक्त रूप से **14** व **15** जनवरी, **2017** को काशी विद्यापीठ, वाराणसी में 'संचार माध्यमों की भाषा और वैश्विक हिंदी' विषय पर दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया।

इसका उद्घाटन माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति, श्री अच्युतानंद मिश्र ने किया। श्री मिश्र ने कहा कि भाषा की दृष्टि से भारत एक स्वाधीन देश नहीं बन पाया। भारत की कोई राष्ट्र भाषा नहीं है। भारत के **78** प्रतिशत लोग हिंदी बोलते और समझते हैं। राजनीतिक पार्टीयों को भी लगता है कि हिंदी जाने बिना उनका कोई भविष्य नहीं है।

हर भाषा का अपना चरित्र और प्रभाव है। भाषा की शक्ति देश की शक्ति होती है, जब भाषा सशक्त होगी तो उसकी राजनीतिक शक्ति भी बड़ी होगी और उस भाषा का प्रभाव बड़ा होगा।

श्री मिश्र ने कहा कि वैश्विक हिंदी के प्रभावी होने पर ही संचार माध्यमों की भाषा सशक्त होगी। हिंदी की शक्ति तब बढ़ेगी जब वह सोशल मीडिया की संतुलित भाषा बने, ज्ञान की भाषा बने, विमर्श की भाषा बने। प्रो. चित्तरंजन मिश्र ने कहा कि जहां हम संगोष्ठी कर रहे हैं, वहां स्वाधीनता का सपना देखा गया था और जिस वर्धा के हिंदी विश्वविद्यालय के सहयोग से यह आयोजन हो रहा है, वह स्वाधीन भारत का सपना देखता है। डॉ. तेजिंदर शर्मा ने कहा कि सिनेमा ने हिंदी को वैश्विक बनाया।

इससे पूर्व स्वागत भाषण व संगोष्ठी का विषय प्रवर्तन डा. कृपाशंकर चौबे ने किया। उद्घाटन सत्र का संचालन काशी विद्यापीठ, वाराणसी के पत्रकारिता व जनसंचार विभाग के अध्यक्ष प्रो. अनिल उपाध्याय ने किया। संगोष्ठी के विभिन्न सत्रों में तात्याना ओरांग्सकाइया (जर्मनी), प्रो. आनंद वर्धन शर्मा, कथाकार प्रो. काशीनाथ सिंह, प्रो. वशिष्ठ नारायण त्रिपाठी, प्रो. बलदेव राज गुप्त, प्रो. गिरिजा शंकर शर्मा, प्रो. श्रद्धानंद, डा. धीरज शुक्ल, डा. कृपाशंकर चौबे, डा. अशोक नाथ त्रिपाठी, डॉ. अख्तर आलम ने अपने विचार रखे।

ज्ञान शांति मैत्री